डिजिटल दुनिया और धार्मिक पूर्वग्रह

प्रा. राजकुमार एन. देशकर
अशोक मोहरकर कला व वाणिज्य
महाविदयालय अडयाळ जिल्हा भंडारा

प्रस्तावना

२१वीं सदी को डिजिटल युग कहा जाता है। आज इंटरनेट, सोशल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और स्मार्टफोन ने मानव जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। सूचना का प्रवाह पहले से कहीं अधिक तेज, व्यापक और सुलभ हो गया है। हम कुछ ही सेकंड में दुनिया के किसी भी कोने की खबर प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन जिस डिजिटल क्रांति ने ज्ञान और संवाद के नए द्वार खोले हैं, उसी ने समाज में नए प्रकार के संकट भी पैदा किए हैं। इन संकटों में से एक महत्वपूर्ण समस्या है कृ धार्मिक पूर्वग्रह (Religious Bias) का प्रसार।

धार्मिक पूर्वग्रह वह मानसिकता है जिसमें व्यक्ति या समूह किसी अन्य धर्म के प्रति नकारात्मक धारणाएँ, रूढ़ियाँ या शत्रुता रखता है। डिजिटल दुनिया में यह पूर्वग्रह कई गुना तेजी से फैलता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, यूट्यूब चौनल, व्हाट्सऐप समूह और अन्य ऑनलाइन मंचों के माध्यम से धार्मिक विचारधाराएँ और कभी–कभी कट्टरपंथी सोच भी बड़े पैमाने पर फैलती हैं।

इस लेख में हम समझेंगे कि डिजिटल दुनिया धार्मिक पूर्वग्रह को कैसे प्रभावित करती है, इसके कारण क्या हैं, इसके सामाजिक प्रभाव क्या हैं और इससे निपटने के उपाय क्या हो सकते हैं।

डिजिटल दुनिया का स्वरूप

डिजिटल दुनिया मुख्य रूप से इंटरनेट आधारित संचार माध्यमों पर आधारित है। इसमें सोशल मीडिया (फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर/एक्स), मैसेजिंग ऐप्स (व्हाट्सऐप, टेलीग्राम), वीडियो प्लेटफॉर्म (यूट्यूब), ब्लॉग्स, न्यूज पोर्टल और ऑनलाइन फोरम शामिल हैं।

डिजिटल माध्यमों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं ।

- त्वरित सूचना प्रसार
- वैश्विक पहुंच
- यूजर–जनरेटेड कंटेंट
- एल्गोरिद्म आधारित कंटेंट चयन
- गोपनीयता और अनाम पहचान

ये विशेषताएँ एक ओर लोकतांत्रिक संवाद को बढ़ावा देती हैं, वहीं दूसरी ओर धार्मिक पूर्वग्रह और दुष्प्रचार को भी बढ़ाने में सहायक बनती हैं।

धार्मिक पूर्वग्रह क्या है?

धार्मिक पूर्वग्रह वह पूर्वधारणा है जो किसी व्यक्ति या समूह के धर्म के आधार पर बनाई जाती है। यह पूर्वग्रह सकारात्मक भी हो सकता है, लेकिन अधिकतर मामलों में यह नकारात्मक रूप में प्रकट होता है, जैसै –

- किसी धर्म को "श्रेष्ठ" और अन्य को "हीन" मानना
- किसी धर्म के अनुयायियों के बारे में रूढ़ धारणाएँ बनाना
- धार्मिक पहचान के आधार पर भेदभाव करना
- धार्मिक नफरत फैलाने वाले संदेश प्रसारित करना

धार्मिक पूर्वग्रह अक्सर सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक कारणों से उत्पन्न होता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म इसे बढ़ाने का माध्यम बन जाते हैं।

डिजिटल माध्यम और धार्मिक पूर्वग्रह का संबंध

१. एल्गोरिद्म और इको चौंबर

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ऐसे एल्गोरिद्म का उपयोग करते हैं जो उपयोगकर्ता की पसंद के अनुसार सामग्री दिखाते हैं। यदि कोई व्यक्ति धार्मिक या कट्टर विचारों से संबंधित सामग्री देखता है, तो प्लेटफॉर्म उसे उसी प्रकार की और सामग्री दिखाने लगता है। इससे एक "इको चौंबर" बनता है, जहाँ व्यक्ति केवल अपनी विचारधारा से मेल खाने वाली जानकारी ही देखता है।

इस स्थिति में अलग दृष्टिकोणों से परिचय नहीं हो पाता और पूर्वग्रह मजबूत होते जाते हैं।

२. फेक न्यूज और दुष्प्रचार

डिजिटल दुनिया में झूठी खबरें बहुत तेजी से फैलती हैं। धार्मिक विषयों पर फर्जी वीडियो, एडिटेड तस्वीरें और भड़काऊ संदेश वायरल हो जाते हैं। कई बार पुराने वीडियो को नए संदर्भ में प्रस्तुत कर धार्मिक तनाव बढ़ाया जाता है।

फेक न्यूज के कारण–

- साम्प्रदायिक दंगे
- सामाजिक अविश्वास
- समुदायों के बीच दूरी

३. ट्रोलिंग और ऑनलाइन नफरत

सोशल मीडिया पर धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाले पोस्ट, मीम्स और टिप्पणियाँ आम हो गई हैं। कुछ लोग जानबूझकर उकसाने वाली सामग्री डालते हैं ताकि विवाद उत्पन्न हो। इससे धार्मिक समुदायों के बीच कटुता बढ़ती है।

४. राजनीतिक उपयोग

राजनीतिक दल और समूह कभी–कभी धार्मिक भावनाओं का उपयोग अपने हित में करते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म चुनावी प्रचार और वैचारिक ध्रुवीकरण का माध्यम बन जाते हैं। इससे धार्मिक पहचान राजनीति का उपकरण बन जाती है।

धार्मिक पूर्वग्रह के सामाजिक प्रभाव

१. सामाजिक विभाजन

डिजिटल पूर्वग्रह समाज को "हम" और "वे" में बाँट देता है। यह विभाजन सामाजिक समरसता को कमजोर करता है।

२. हिंसा और तनाव

ऑनलाइन भड़काऊ संदेश वास्तविक जीवन में हिंसा को जन्म दे सकते हैं। इतिहास में कई उदाहरण हैं जहाँ सोशल मीडिया पोस्ट के कारण तनाव बढ़ा।

३. मानसिक प्रभाव

लगातार नफरत भरी सामग्री देखने से व्यक्ति की सोच कठोर हो जाती है। सहिष्णुता कम होती है और संवाद की क्षमता घटती है।

४. लोकतंत्र पर प्रभाव

धार्मिक ध्रुवीकरण लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए खतरा बन सकता है। जब नागरिक तथ्य के बजाय भावनाओं के आधार पर निर्णय लेते हैं, तो लोकतांत्रिक प्रक्रिया प्रभावित होती है।

सकारात्मक पक्ष

हालाँकि डिजिटल दुनिया केवल नकारात्मक नहीं है। इसके कई सकारात्मक पहलू भी हैंरू

- अंतरधार्मिक संवाद को बढ़ावा
- विविधता की जानकारी
- धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित अभियान
- शांति और भाईचारे के संदेश

कई संगठन और युवा समूह डिजिटल माध्यमों का उपयोग धार्मिक सौहार्द बढ़ाने के लिए कर रहे हैं।

समाधान और उपाय

१. डिजिटल साक्षरता

लोगों को यह सिखाना आवश्यक है कि ऑनलाइन सामग्री को कैसे परखें।

स्रोत की जांच

- तथ्य सत्यापन
- भावनात्मक संदेशों से सावधानी

२. प्लेटफॉर्म की जिम्मेदारी

सोशल मीडिया कंपनियों को नफरत फैलाने वाली सामग्री पर नियंत्रण करना चाहिए।

- हेट स्पीच मॉनिटरिंग
- फेक न्यूज की पहचान
- सामुदायिक दिशानिर्देशों का कड़ाई से पालन

३. कानूनी उपाय

सरकारों को डिजिटल दुष्प्रचार रोकने के लिए उचित कानून बनाने चाहिए। परंतु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी संतुलन आवश्यक है।

४. अंतरधार्मिक संवाद

ऑनलाइन वेबिनार, चर्चाएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर विभिन्न समुदायों के बीच समझ बढ़ाई जा सकती है।

५. शिक्षा प्रणाली में सुधार

स्कूल और कॉलेजों में नैतिक शिक्षा, संविधानिक मूल्यों और विविधता के सम्मान को बढ़ावा देना चाहिए।

निर्षक

आज की डिजिटल दुनिया ने संचार, सूचना और अभिव्यक्ति के नए आयाम खोले हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया और विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म ने विश्व को एक वैश्विक गाँव में बदल दिया है। लेकिन जहाँ एक ओर यह तकनीक लोगों को जोड़ने का माध्यम बनी है, वहीं दूसरी ओर धार्मिक पूर्वग्रहों के प्रसार का एक सशक्त उपकरण भी बन गई है। डिजिटल माध्यमों की तीव्र गति और व्यापक पहुँच के कारण धार्मिक विचार, मान्यताएँ और मतभेद अब सीमाओं से परे जाकर तुरंत लाखों लोगों तक पहुँच जाते हैं।

धार्मिक पूर्वग्रह तब उत्पन्न होते हैं जब किसी धर्म, समुदाय या आस्था के प्रति बिना पर्याप्त समझ के नकारात्मक धारणाएँ बना ली जाती हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर ऐसी धारणाएँ अक्सर भ्रामक सूचनाओं,

आधी–अधूरी खबरों और भावनात्मक पोस्टों के माध्यम से फैलती हैं। एल्गोरिदम–आधारित सामग्री उपयोगकर्ता को वही दिखाती है जो उसके विचारों से मेल खाती है, जिससे "इको चौंबर" का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति विविध दृष्टिकोणों से दूर होता जाता है और अपने ही विचारों को अंतिम सत्य मानने लगता है। परिणामस्वरूप, समाज में विभाजन और असहिष्णुता बढ़ सकती है।

फेक न्यूज, ट्रोलिंग और हेट स्पीच डिजिटल दुनिया की ऐसी चुनौतियाँ हैं जो धार्मिक पूर्वाग्रहों को और अधिक प्रबल बनाती हैं। कई बार असत्य या भड़काऊ सामग्री जानबूझकर फैलायी जाती है ताकि सामाजिक तनाव उत्पन्न हो। डिजिटल साक्षरता की कमी भी एक महत्वपूर्ण कारण है, क्योंकि बहुत से लोग बिना सत्यापन के किसी भी जानकारी को सच मान लेते हैं और उसे आगे साझा कर देते हैं।

हालाँकि, डिजिटल दुनिया केवल समस्या नहीं हैय यह समाधान का माध्यम भी बन सकती है। यदि इसका उपयोग जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ किया जाए तो यह विभिन्न धर्मों के बीच संवाद, समझ और सहिष्णुता को बढ़ावा दे सकती है। ऑनलाइन इंटरफेथ संवाद, शैक्षिक सामग्री और सकारात्मक अभियानों के माध्यम से लोगों को विविधता का सम्मान करना सिखाया जा सकता है।

निष्कर्षत:, डिजिटल दुनिया और धार्मिक पूर्वग्रह का संबंध दोधारी तलवार की तरह है। यह या तो समाज में विभाजन को बढ़ा सकती है या फिर समझ और एकता को मजबूत कर सकती है। आवश्यक है कि उपयोगकर्ता डिजिटल साक्षरता विकसित करें, किसी भी जानकारी को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जाँच करें और सम्मानपूर्ण संवाद को प्राथमिकता दें। साथ ही, प्लेटफॉर्म संचालकों और सरकारों को भी जिम्मेदारीपूर्वक नीतियाँ बनानी चाहिए ताकि घृणा और भ्रामक सामग्री पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके।

अंतत:, तकनीक स्वयं न तो अच्छी है और न ही बुरीकृउसका स्वरूप इस बात पर निर्भर करता है कि हम उसका उपयोग किस उद्देश्य से करते हैं। यदि हम डिजिटल माध्यमों को सद्भाव, सहिष्णुता और मानवता के मूल्यों के साथ जोड़ें, तो यह विविध धार्मिक समुदायों के बीच पुल का कार्य कर सकती है और एक समावेशी समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. **Network Society** – Manuel Castells
२. **Alone Together** – Sherry Turkle
३. **The Filter Bubble** – Eli Pariser
४. **Media and Religion** – Stewart M. Hoover
५. **Digital Religion** – Heidi A. Campbell
६. **UNESCO** – "Media and Information Literacy
७. **Pew Research Center** – Religion & Public Life Reports
८. **Internet and Mobile Association of India** डिजिटल उपयोग और सोशल मीडिया रिपोर्ट